International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 09-09-2019; Accepted: 12-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 26-27

वेब मीडिया में हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य

डॉ. ए. के बिन्दु
सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग,महाराजा कॉलेज (सरकारी स्वायत्त) एरणाकुलम , केरल, भारत

प्रस्तावना

दुनिया को इंटरनेट का विज़न देनेवाले मार्शल मैक्लूहान ने 20वीं शताब्दी के मध्य में यह घोषणा की थी कि संचार माध्यम पूरी दुनिया और चेतना को बदल देगा । 'अण्डरस्टैंडिंग मीडिया: द एक्सटैन्शन ऑफ मान(Understanding Media: The extension of Man) ' में उन्होने ग्लोबल विल्लेज की संकल्पना करते हुए उसमें सहायक मीडिया के जिस साम्राज्यवाद की चर्चा की उसकी पुष्टि एल्विन टॉफ्लर के इस उद्धरण से हो जाती है- 'समाज में इन सभी आयामों में द्रुत गति से परिवर्तन हो रहे हैं, इतने सारे सामाजिक,संस्कृतिक और तकनीकी तत्वों को एक साथ बदल दीजिए तो एक अंतरिम बदलाव नहीं , कायाकल्प होगा, एक नया समाज ही नहीं बनेगा,बल्कि कम से कम एक नितांत नई सभ्यता का जन्म ही रहा होगा। जिसका आधार सूचना एवं जनसंचार क्रांति है'।सूचना क्रांति के फलस्वरूप जो मीडिया उभरकर सामने आया है, वह वर्तमान दौर में डिजीटल क्रांति का सबसे बडा अस्त्र बन गया है। मीडिया हो या वेब मीडिया भाषा के बिना निक्ष्प्राण है। वेब मीडिया और हिन्दी का अंत:संबंध वैश्वीकरण की देन है। मीडिया के जितने भी साधन दृश्य,श्रव्य तथा प्रिंट उन्हें वेब के साथ जोड़ा ही नहीं गया बल्कि विश्व में हिन्दी के प्रचलन को देखते हुए वेब मीडिया में स्थानांतरित भी किया गया। जिसके कारण दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक हिन्दी भाषी तथा अहिंदी भाषी इसे पढ और लिख सकते हैं।

आज देश में मीडिया अपने पारंपरिक स्वरूप से निकलकर तकनीकी के मुक्ताकाश में विचरती दिखाई देती है। पत्रकारिता का यह अत्याधुनिक क्रांतिकारी रूपान्तरण है – ई जर्नलिज़्म(वेब पत्रकारिता)। आज एक बटन दबाने पर विश्व के सभी समाचार पत्र हमारे स्क्रीन में आ जाते हैं। आज, नई दुनिया, नवभारत टाइम्स, हिंदुस्तान, जागरण, पंजाब केसरी, राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, प्रभात खबर, अमर उजाला, आदि इसके उदाहरण है। जिस प्रकार अखबारों ने ई संस्करण निकाले हैं उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को समर्पित अनेक पत्रिकाओं ने अपने ई पत्रिकाएँ निकालना शुरू किया। हिन्दी नेस्ट, सृजन गाथा, अभिव्यक्ति, अनुभूति , शब्दांजली, साहित्य कुंज, छाया, गर्भानल, भारत दर्शन, वेब दुनिया, रचनाकार, कलायन, आदि साहित्यिक पत्रिकाओं के साथ हंस, वागर्थ, तद्भव, नया ज्ञानोदय, मधुमती आदि पत्रिकाएँ भी वेब पत्रकारिता के अविभाज्य अंग बन चुके हैं।

व्यावसायिक स्पर्धा बढ़ने से बी.बी.सी ने इंटरनेट सेवाएँ शुरू की है। बी.बी.सी हिन्दी .कॉम से भी स्तंभकार और साहित्यिक पत्रकार के रूप में जुड़े रहे। विदेशों में एफ.एम, जर्मनी के डायचे वेले, जापान के एन.एच के वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। हिन्दी भाषा के विकास में बी.बी.सी ने वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार का कार्य किया है। आज तक, नेट चैनल एम एस एन, याहू, सिफी, वेब दुनिया,गूगल ये सभी हिन्दी में समाचार देते हैं। साहित्य विषयक अनेक साइट्स भी हैं जहां किसी रचनकार विशेष या कृति विशेष।

हिन्दी ब्लोगिंग(चिट्ठा) एक समानान्तर मीडिया का रूप ले चुकी है। आदि चिट्ठाकार के नाम से मशहूर आलोक कुमार को हिंदी का पहला ब्लॉगर का श्रेय मिलता है। उन्होंने 21 अप्रैल 2003 को हिन्दी के प्रथम ब्लॉग 'नौ दो ग्यारह' का सूत्रपात किया। साथ ही देवनागरी.नेट नाम का एक हिन्दी संसाधन साइट भी बनाया । 2003 में यूनीकोड़ में देवनागरी लिपि में लिखने की सुविधा ने मानो हिन्दी ब्लोगिंग को पंख लगा दिये। आज तकरीबन 50000 हिन्दी ब्लॉग, चिट्ठा जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। महिलाओं में हिन्दी ब्लोगिंग आरंभ करने का श्रेय मध्यप्रदेश के इंदौर की पूजा को है जिन्होंने वर्ष 2003 में 'कहीं अनकहीं' ब्लॉग के माध्यम से इसकी शुरुआत की। इसे इंटरनेट अर्काईव पर देखा जा सकता है। हिन्दी ब्लोगिंग की स्थिति बहुत ही सृजनशील तथा संभावनाओं से परिपूर्ण है। गिरगिट नमक लिपि परिवर्तक को ऑनलाइन प्रस्तुत करने में भी योगदान दिया। यूनिकोड़ हिन्दी से ब्रेल लिपि परिवर्तक तैयार करने में अनुनाद सिंह का योगदान महत्वपूर्ण है। हिन्दी विकिपीडिया में एक लाख से अधिक पन्ने जोड़ने का काम अनुनाद सिंह के अथक प्रयत्नों के जरिये ही संभव हुआ । मोज़िला फायरफाक्स के हिन्दी केलिए कई एक्स्टेंशन उन्होंने बनाए । साथ ही हिन्दी के सिम्पल डिक्शनरी एप्लिकेशन हेतु शब्दकोश मुहैया कराने में बड़ी भूमिका भी निभाई है । आज साइबर स्पेस पर हिन्दी ब्लॉग हमेशा केलिए डायरी के पन्नों में दर्ज हो गयी है। हिन्दी के सभी ब्लॉग को संकलित कर एक स्थान पर दिखानेवाली फीड एग्रिगेटर स्लाइड 'नारद-हिन्दी-चिट्ठा संग्रहक'(http//narad.akshargram.com) है। साहित्यिक गतिविधिओं आदि का संचालन इस साइट द्वारा समय-समय पर किया जा रहा हे। इसका लक्ष्य है कि हिन्दी को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित एवं प्रसारित करना।

वेब मीडिया के सोशल साइट्स पर भी हिन्दी की बढ़ती उपस्थिती दिखाई पड़ती है। ब्लोगस का प्रचार-प्रसार करने में फेसबुक एक लोकप्रिय माध्यम है। सोशल नेटवर्किंग और मोबाइल ,फेसबुक,ट्वीटर , याहू के अलावा तमाम नेटवर्किंग वेबसाइट पर हिन्दी का धड़ल्ले से इस्तेमाल किया जा रहा है। वेब मीडिया ने हिन्दी में नई प्रतिभाओं को सामने लाने में अहम भूमिका अदा की है। साथ ही प्रकाशकों और लेखकों की नई रचनाओं या विचारों को जनता तक पहुंचाने केलिए अथक प्रयास भी किया है।

भारत के लोकतन्त्र में मीडिया का बहुत बड़ा हाथ है। मीडिया के बदलते स्वरूप में वेब मीडिया अपना जाल फैलाने में पूरी तरह से सफल रहा है।हिन्दी होम पेज डॉट कॉम हिन्दी का एक ऐसा पोर्टल है जिसमें हिन्दी के बारे में सूचना संदर्भ समाचार,ज्ञान, शिक्षा और सेवाओं के संसाधन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस बहुआयामी पोर्टल का एक प्रमुख उद्धेश्य भाषा के कारण अपनी डिजिटल खाई को पाटना है। इसके विभिन्न विषयों पर केन्द्रित हिन्दी के उपयोगी और महत्वपूर्ण वेब स्थल, चिट्ठे और पोर्टल आ रहे हैं ताकि पूरे विश्व में फैले हिन्दी भाषी लोग आसानी से यहाँ तक पहुँच सके और इनका उपयोग कर सकें। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का श्रेय हिन्दी पोर्टल वेब दुनिया को मिला। हिन्दी का पहला पोर्टल वेब दुनिया डॉट कॉम इंटरनेट पर लाया गया, जिससे इंटरनेट पर हिन्दी समाचार प्रसारित किए जा सकते थे।

तकनीक का विकास और भाषा चयन में आसानी, बाज़ार का दबाव, हिन्दी और उसकी सहयोगी भाषाओं से हमारा जुड़ाव आदि कारणों से सोशल मीडिया पर हिन्दी प्रयोग का माहौल बढ़ रहा है। सूचना तकनीकी के बदौलत आज वेब मीडिया पर हिन्दी भाषा से संबन्धित आवश्यक सॉफ्टवेयर उपलब्ध है । हिन्दी वर्तनी जांचक, फॉन्ट परिवर्तक,लिपि परिवर्तक, अनुवाद, उच्चारण संबंधी तकनीकी , हिन्दी में कही बात को पाठ में बदलनेवाले सॉफ्टवेयर, हिन्दी-अँग्रेजी,अँग्रेजी –हिन्दी कोश,हिन्दी ई पुस्तकें, ई मेल के साथ कई सुविधाएं इंटरनेट पर मुहैया करती है।

वेब मीडिया दरअसल सूचनाओं का समंदर है। हिन्दी भाषा के व्याकरण की सूक्ष्मताओं के स्पष्टीकरण में इसकी भूमिका सराहनीय है। इसमें हिन्दी के द्वारा छात्रों को व्याकरण, शब्द प्रयोग,निबंध आदि केलिए पाठ्य सामाग्री संबन्धित उपयोगी जानकारी एवं अभ्यास हेतु सामाग्री मिल जाती हैं। साथ ही हिन्दी लिखने-सीखने का एक मंच भी बन गया है। इनके कुछ प्रमुख साइट्स हैं- speak hindi.com,hindi language.com,learning hindi.com,fluent in 3 months.com आदि। इन साइटों के माध्यम से आज विदेशी और अहिंदी भाषी लोग आसानी से हिन्दी पढ़ सकते हैं। ई लर्निंग का इस संदर्भ में विशेष महत्व है।

भारतीय भाषाओं केलिए उपयोगी सॉफ्टवेर पैकेज विकसित करने के उद्देश्य से सी डैक पुणे ने हिन्दी सीखने केलिए दो मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर पैकेज तैयार किए हैं- लीला हिन्दी स्वयं शिक्षक(विदेशियों केलिए)और लीला हिन्दी प्रबोध सोफ्टवेयर (सरकारी कर्मचारियों केलिए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित)सॉफ्टवेयर पैकेज। इन दोनों पैकेज में स्पीच कार्ड की मदद से पाठों तथा शब्दों का उच्चारण सुनने , अपनी आवाज़ टेप करने तथा विस्तृत अभ्यास करने की सुविधा उपलब्ध है। इस प्रकार विदेशियों को आसानी से हिन्दी सीखने की सुविधा इंटरनेट के हिन्दी सॉफ्टवेयर कार्यक्रमों से प्रदान की जा रही है, जिससे हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है। हिन्दी प्रबोध,प्रवीण एवं प्रज्ञा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षण के मूल्यांकन हेतु ऑनलाइन परीक्षा का भी विकास किया जा रहा है। द्विभाषी-द्विआयामी अँग्रेजी-हिन्दी उच्चारण सहित ई महा शब्दकोश का विकास किया गया है।

हिन्दी वेब मीडिया को देश और वैश्विक स्तर पर मजबूत बनाने केलिए अनुवाद को एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकृत करना आवश्यक है। वर्तमान समय में आई आई टी मुंबई, आई आई टी कानपुर,आई आई टी हैदराबाद , हैदराबाद विश्वविद्यालय , सी-डैक पुणे ऐसी कई अनुसंधान संस्थाओं में हिन्दी केलिए मशीनी अनुवाद प्रणाली का विकास तेज़ी से हो रहा है। हैदराबाद विश्वविद्यालय और आइ.आइ.टी कानपुर ने हिन्दी और दक्षिण भाषाओं के बीच 'अनुवाद' सॉफ्टवेयर का विकास किया है।

हिन्दी भाषा के विकास में हिन्दी वेबसाइट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यूनिकोड का आना हिन्दी केलिए वरदान साबित हो रहा है। हिन्दी भाषा में वेबपेज करने हेतु 'प्लग इन' पैकेज तैयार किया है, जिससे कोई भी व्यक्ति , संस्था अपना वेबपेज हिन्दी में प्रकाशित कर सकता है। कृतिदेव, श्रीलिपि इत्यादि फॉन्ट को यूनिकोड में परिवर्तित कर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया जा रहा है। यूनिकोड पर आधारित मंगल फॉन्ट को मैक्रोसोफ्ट ने विकसित किया है। आज माइक्रोसॉफ्ट ,याहू,रेडिफ़ आदि विदेशी कंपनियाँ अपनी वेबसाइट , सूचना प्रौद्योगिकी में ई-कॉमर्स ,ई गोवेर्नेंस क्षेत्र में हिन्दी का विकास कर रही है। वर्तमान युग में इंटरनेट पर विभिन्न भाषा टूल्स मौजूद है जो हिन्दीके लिप्यंतरण को सरल बनाता है। इंटरनेट पर हिन्दी के प्रचार-प्रसार केलिए हिंदीगाथा नाम से हिन्दी टूलबार की शुरुआत की गयी। रफ्तार नामक सर्च इंजन से हिन्दी की किसी भी वेबसाइट पर जाया जा सकता है। 2014 में सिफी(कंपनी ने भारत के लोगों को मन में रखते हुए पहला हिन्दी बेस्ड आंड्रोइड स्मार्टफोन निकाला है जिसकी खासियत यह है कि यह पूर्णत: हिन्दी कुंजीपटल और वॉइस इनपुट से बना है। इस मोबाइल में जो एप्लिकेशन्स है वे भी हिन्दी में है और इसमें सोनी लाइव, गूगल ट्रांस्लेट जैसे फीचर भी है जो अनपढ़ लोगों केलिए भी सहायक सिद्ध हुई हैं।

विकसित देशों केलिए भारत एक संभावनाशील बाज़ार है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, याहू, आईबीएम,ओरकल जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हिन्दी से संभावित लाभ की अपार क्षमता और प्रचुर संभावनाओं के चलते , इस वक्त अपनी दूरगामी बाज़ार नीति पर ज़ोर दे रही है। क्योंकि ये कंपनियाँ यह जानती है कि करोड़ों की आबादी केलिए हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं को माध्यम बनाकर भरपूर लाभ कमाया जा सकता है। डाटा प्रॉसेसर हिन्दी में बनने से अब कोर बैंकिंग में भी हिन्दी के प्रवेश की तैयारियाँ ज़ोरों पर है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हिन्दी को विज्ञापन तथा बाज़ार वृद्धि के साधन के रूप में स्वीकार किया है। संचार क्रांति भौगोलिक विश्व की मांग है क्योंकि जोड़ने का कार्य तो यही कर रही है। जिसे अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। हिन्दी राष्ट्रभाषा न बन पाई लेकिन वह मीडिया मालिकों के आर्थिक मुनाफे की भाषा बन गयी है। दरअसल यह दौर हिंदी को मार्केट फ्रेंडली बनाने का है। टी वी चैनल और एस एम एस भाषा से हिन्दी का कैनवास बढ़ रहा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार , वेब मीडिया मालिकों का व्यक्तिगत स्वार्थ, बाज़ारवाद के अनुसार प्रत्येक वस्तु को उत्पाद समझना और उसे बेचना, पाश्चात्य प्रभाव ,विकास के नाम पर आधुनिकता की होड में हिन्दी का अंग्रेज़ीकरण कर देना आदि वेब मीडिया पर हिन्दी के ग्राफ को ऊपर उठाते हैं। वेब मीडिया पर हिन्दी के माध्यम से ही वैश्विक सूचना समाज की परिकल्पना को साकार किया जा रहा है। आज हिन्दी वैश्विक सूचना समाज का एक महत्वपूर्ण सदस्य है।

बहरहाल वेब मीडिया ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका अदा की है। इसने हिन्दी रूपी मोती को भारत रूपी सीपी से बाहर निकालकर समस्त विश्व के गले का हर बनाया है।अपनी सूचना, मनोरंजन एवं पोपुलर कल्चररूपी माल को बेचने हेतु वेब मीडिया को हिन्दी को स्वीकारना पड़ा, जिससे उपभोक्ताओं की संख्या में बढ़ोत्तरी की जा सकती है और अपने मीडिया व्यापार में मुनाफा कमाया जा सकता है। जो भी हो हिन्दी के रास्ते में आनेवाले कंटकों को हटाकर ठोस कदम उठाना हमारा कर्तव्य है।तभी वेब मीडिया पर हिन्दी की गौरवपूर्ण उपस्थिती दर्ज हो सकती है। आज हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य एवं प्रभाव से भारतवर्ष ही नहीं अपितु पूरे विश्व परिचित हो रहे हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आवश्यकता हों या वैश्वीकरण एवं बाजारीकरण की प्रवृत्ति हो विश्व में हिन्दी को प्रमुख भाषा के रूप में मान्यता मिल रही है। बाजारू मानसिकता में भी हिन्दी ने अपनी प्रकृति एवं प्रवृत्ति के कारण लोगों को मोहित किया है इस सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। हिन्दी की प्रगति तभी संभव है जब हम इसे केवल साहित्य तक सीमित नहीं रखते हुए सामाजिक विमर्श,ज्ञान विमर्श,संवाद आदि की भाषा बनाएँगे। हमें इन मुद्दों पर विचार-विमर्श करने केलिए वेब मीडिया के रूप में एक बहुत उपयोगी साधन मिला है।

सदर्भ ग्रंथ

1. मीडिया और लोकतन्त्र –प्रो.रवीन्द्र मिश्र
2. हिन्दी भाषा और कंप्यूटर –डॉ. संतोष गोयल
3. संचार माध्यम तकनीक और लेखन-डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ
4. सूचना प्रौद्योगिकी और समाचार – रवीन्द्र शुक्ला
5. वैश्वीकरण मीडिया और समाज –रंगोपाल सिंह
6. मीडिया विमर्श –त्रैमासिक पत्रिका-संपादक श्रीकांत सिंह –वर्ष6-अंक 24-जुलाई –सितंबर 2012.
7. कृतिका –अर्धवार्षिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका-सं. वीरेंद्र सिंह यादव-वर्ष-5, अंक 9-10, जनवरी-दिसंबर 2012.
8. आज का मीडिया समकालीन सृजन-सं.शम्भुनाथ
9. मीडिया और साहित्य –सुधीश पचौरी
10. हिन्दी ब्लोगिंग स्वरूप,व्याप्ति और संभावनाएँ-डॉ. मनीश्कुमर मिश्रा
11. प्रयोजनमूलक हिन्दी-प्रो. रमेश जैन
12. राजभाषा हिन्दी और तकनीकी अनुवाद-रमेश चंद्र
13. अनुवाद पत्रिका-अंक 137,160,161
14. अभिव्यक्ति वेब पत्रिका, गर्भनाल वेब पत्रिका
15. गूगल विकीपेडिया
16ण hindikhoj.com/internet/11/9/2015